भूमिका

महात्मा गांधी ने अपने सम्पूर्ण जीवन काल में अनेक विचारों का प्रतिपादन किया .उनका जीवन स्वयं एक विचार है .उनके विचार के विविध आयाम रहे हैं .प्रस्तुत शोध-प्रबंध 'गांधी जी कि इतिहास दृष्टि' उन्ही विविध आयामों में से एक है .उन्होंने इतिहास को बड़ी पैनी नज़र से देखा है .

इतिहास एक इति वृत्त है .जिसे बहुत से विद्वानों ने अपने अपने ढंग से अपने अपने विचार और तरीकों से देखने का प्रयास किया है .जैसे मार्क्स इतिहास को भौतिक द्वंद्ववाद के रूप में देखता है.उसका कथन है . "अब तक का इतिहास संघर्षों का इतिहास रहा है." इ.एच.कार कहते है , "इतिहास अतीत और वर्तमान के बीच होने वाले होने वाले एक अन्तःहीन संवाद की भांति है ." इसी प्रकार अन्य विद्वानों ने भी इतिहास को परिभाषित और व्याख्यायित किये हुए हैं .

विद्वानों के इतिहास को देखने का नजरिया भी अलग अलग रहा है. जिस दर्शन को जिस दृष्टि से देखा जाता है वह उसके देखने का दृष्टिकोण होता है .और सभी दर्शन का एक इतिहास दृष्टि होती है .इतिहास दृष्टि भी अनेक प्रकार की होती है .आदर्शवादी ,परम्परावादी,मार्क्सवादी ,मानववादी इत्यादि इतिहास दृष्टियाँ सिर्फ इतिहास को युद्धों का इतिहास ,वृतांतों का इतिहास ,संघर्षों का इतिहास इत्यादि बताये हुए हैं .

गांधी जी भी इतिहास को अपने नजरिये से देखते है .वह इतिहास पर बहुत अच्छा अनुभव नहीं करते है जिस प्रकार से सत्य और अहिंसा को .उन्होंने इतिहास को नकार दिया है .उनका मानना है कि इतिहास सिर्फ युद्धों और इतिवृतान्तों या फिर संघर्षों का इतिहास नहीं है .यदि इतिहास में सिर्फ युद्ध और संघर्ष होते तो आज मानव समाप्त हो जाते .मानवीयता का कोई स्वरुप नहीं होता .इतिहास में उन लोगों को कभी दर्ज नहीं किया गया जिन्होंने युद्धों के पश्चात या संघर्ष के पश्चात् इस सभ्यता और संस्कृति को बचा कर स्वयं को और समाज को जीवित रखे हैं . इतिहास में सिर्फ पाश्विक-बल ही नहीं अपितु उसमें आत्म-बल भी है . सिर्फ संघर्ष और युद्ध ही नहीं अपितु प्रेम और सौहार्दय भी है .गांधी जी इतिहास

में द्वंद्ववाद को मानते है किन्तु द्वंद्ववाद के बाद प्रेम और सहयोग को भी मानते है .उनका द्वंद्ववाद मार्क्स कि तरह आर्थिक नहीं है बल्कि अहिंसा और आत्म-बल और पशु-बल के बीच का द्वंद्व है . गांधी जी मानव प्रकृति को स्वभावतः अच्छा मानते है .तथा वह मानव प्रकृति में सहयोग,घृणा ,प्रेम, द्वेष,ईर्ष्या ,साहस इत्यादि सभी गुणों से परिपूर्ण मानते है .उसको परिस्थिति और आवश्यकता ने ही बुरा बना दिया है .उसकी महत्वाकांक्षा जब आवश्यकता से अधिक होने लगती है तो मनुष्य अपने पाश्विक-बल का प्रयोग करना शुरू कर देता है ,जिससे समाज में अशांति और अराजकता फ़ैल जाती है .इतिहास इन्ही सभी कारणों का परिणाम है जिसमें सिर्फ इतिवृत ही लिखे जाते है .जिसको गांधी जी नकारते है .इतिहास में भरे प्रेम ,सत्य ,अहिंसा तथा सहयोग स्वरुप भावनाओं को स्वीकार करते है तथा इन्हें भी इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा मानते है .

अतः गांधी जी की इतिहास दृष्टि नैतिक ,प्रेम ,सत्य अहिंसा पर आधारित है .